सुणियों जजमानों बात अचम्बे की

आज कल एक नया रिवाज आया है देवर/जेठ को भैया कहने का,

मन्ने या बात मेरी ताई को बताई!

मेरी ताई बोली, “आँ रे फेर वा अपने घर आले ने के कह?”

मखा ताई उसने के कहगी?

बोली एक भैया होया तो उसका भाई भी तो भैया होया? ढेडणी ने शर्म नहीं आंदी अक आपने देवर-जेठ पै विश्वास कोनी? अक देवर-जेठ मेरे पै दूसरे डब की निगाह फ़ेरै इस्तें पहल्यां इसनें भैया-ए बणा ल्यूं सारी उम्र का संकट कटे।

ना ताई इहसी बात तो नी होणी चहिये।

रे इसी-ए सै, जब-ए तो कई ज्यातां (जातियां) म्ह विधवा-विवाह नी होण पान्दे अक क्यूँ नई बहु आन्दिये देवर-जेठ नैं भाई बोल दे सै तो फेर वा पति के गुजर ज्याण की सूरत म्ह दूसरा ब्याह करणा भी चाहवै तो नहीं कर पांदी। ए रे भाई इस्तें तो म्हारी-ए मानता आच्छी। जिसमें रिश्ते का विश्वास भी बणा रह अर आगली नें देवर-जेठ भाई भी ना बनाणा पड़े। अर भाई बात सही भी सै जो किसे नैं रिश्ते म्ह विश्वास हो तो उसका नाम बदलण की के जरूरत रे? बताओ म्हारी इस मानता म्ह घणी आजादी अक उस मानता म्ह जुनसी सीधे-पाधरे रिश्ते का भी खोस्सण ठा दे।

ताई वें विधवा-ब्याह नें छोरी गेल धक्का-साही मानें सें।

धक्का-साही किहसी रे, तेरी काकी विधवा होई जब उसपै तो किसे-नें दाब ना गेरी। आगली की मर्जी पी छोड़ दी थी। अर तेरे दादा होर नैं दो-टूक कह दी थी अक "चाहवो तो थारे देवर नैं प्रणा ल्यो बेटा अर एकली जिंदगी गुजारना चाहवो तो वो भी थारी मर्जी बेटा" अर या तब की बात है जब तेरा चाचा कुंवारा होया करदा। तेरी चाची कै तो किसे नैं ना बेल घाल्ली, आज गूँज कें बस रही सै आपणी 2 बेटियाँ अर एक बेटे गैलां।

अर तेरी काकी धर्मबीर की बहु नैं देख ले 4 बेटियाँ की माँ सै, साफ़ नाट्गी थी देवर का लत्ता ओढ़ण तैं। उसका देवर ऊत बताइये था तो उसके जेठ का ओढ़ण कही तो उस्तें भी नाटगी अर आज देख ले 3 बेटी तो पढ़ा-ल्यखा कें ब्याह दी अर चौथी नैं पढ़ाण लाग रही सै। अर और कहता हो तो जितणे कहवै उतनी तेरे गाम म्ह और द्य्खा द्यूं। अर दोनूं ढाळ की दीखा द्यूं, इहसी भी जुन्सी विधवा-ब्याह कर रिह सें अर इहसी भी जुन्सी विधवा हो कें एकली भी रह सें आपणी मर्जी तें।

मखा देख ले ताई फेर यें आज के सयाने म्हारी मान्यताओं नें रूढ़ीवाद कह दे सें।

ताई फेर बोल्ली रे बेटा जिन खात्तर अंगूर खाट्टे हों वें किमें तो राह टोहवें आपणे दिल नैं तस्सल्ली दें तान्हीं

मखा याह बात चोखी कही ताई थामने